मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि सृजन

अंक : 27

माह : फरवरी 2025

गीतकार

सुषमा त्रिपाठी (स०अ०)

उच्च प्राथमिक विद्यालय खजनी (रुद्रपुर)

गोरखपुर

संकलन - मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि टीम

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

फरवरी 2025

कक्षा–1, विषय–मृदंग

पाठ–1, My family and me

666

तर्ज–लोकगीत

गीत– दो छोटे हाथ तालियां बजाते हैं

दो छोटे हाथ,
तालियां बजाते हैं,
दो छोटे पैर,
चलते ही जाते हैं।।

दो छोटे पैर,
कुछ दूर तलक हैं खुलते।
एक छोटा हाथ,
कंधे से कंधा हैं मिलाते।।

दो छोटी आँखें,
चारों ओर देखती हैं।
दो छोटे कान,
सबकुछ सुन सकती हैं।।

हाथ ताली हैं बजाते,
पैर चक्कर लगाते।।
एक मेरा ये शरीर,
मेरे काम बहुत हैं आते।।

सुषमा त्रिपाठी (स०अ०)
उच्च प्राथमिक विद्यालय खजनी
रुद्रपुर गोरखपुर

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन
फरवरी 2025

कक्षा-2, विषय-सारंगी (हिन्दी)

पाठ-2, घर

667

तर्ज-लोकगीत

गीत- पापा अपना घर क्यों...

पापा अपना घर क्यों मुझे अच्छा लगे,
हर पल हर जगह मुझे अच्छा लगे।।

जहाँ भी हम जाएँ, जहाँ भी रहें,
खेल का मैदान हो या दोस्तों का साथ।
घर की यादें मुझे आती रहें,
घर ही सुख दुःख का मेरे साथी रहे।।

मम्मी की गोदी सा प्यार ये घर,
प्रेम और आराम सा सहारा ये घर।
ममता की ईंटों और स्नेह के गारे से,
निर्मित है अपना ये प्यारा सा घर।।

थककर जब आते ये बाहों में है लेता,
पोषण,आराम नई ऊर्जा हमें देता।
जोश और उमंग से भर देता है घर,
आगे बढ़ने को उकसाता ये घर।।

सुषमा त्रिपाठी (स०अ०)
उच्च प्राथमिक विद्यालय खजनी
रुद्रपुर गोरखपुर

शिक्षा का उत्थान
मिशन शिक्षण संवाद
शिक्षक का सम्मान

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन
फरवरी 2025

कक्षा–2, विषय–सारंगी (हिन्दी)
पाठ–3, माला की चाँदी की पायल

668

तर्ज–लोकगीत
गीत–बहुत शरारती थी माला

बहुत शरारती थी माला,
खेल शरारतें बहुत निराला।
बिल्ली को डराती हुश्शश् ,
हेएए नानी को चौंका डाला।।

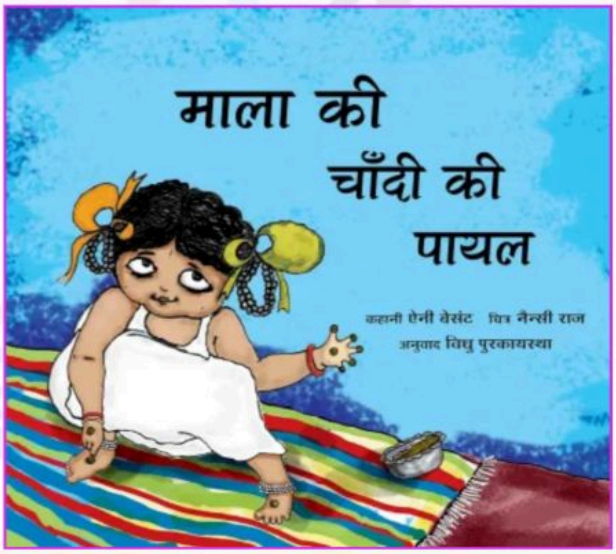

भाई को डराती गाँव करे हैरान,
उसकी आदतों से सभी थे परेशान।
मां ने डिब्बे में चांदी की पायल लाई,
माला के नाजुक पाँवों में पहनाई।।

पायल की छम-छम सुनकर,
सभी माला को जान जाते थे,
उसके बदले व्यवहारों से अब,
माला संग सब जन सुख पाते थे।।

सुषमा त्रिपाठी (स०अ०)
कं० उ० प्रा० वि० खजनी (रुद्रपुर),
गोरखपुर

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन
फरवरी 2025

कक्षा–6, विषय–विज्ञान

पाठ–16, जल

669

तर्ज–लोकगीत
गीत– जल है जीवन का आधार..

जल जीवन का है आधार,
इसके बिन जीवन बेकार।
अंगों में स्फूर्ति है आती,
बेचैनी दूर हो जाती।।

ऑक्सीजन की तरह आवश्यक जल,
जल बिन हो जाता है जीवन बेकल।
पृथ्वी पर जीवन भी न हो पाता,
प्रकृति से यदि जल ना आता।।

शरीर में जल की मात्रा अधिक,
जल वृद्धि में भी सहायक है।
जल का प्रतिशत पृथ्वी पर अधिक,
जल जीवन का ही वाहक है।।

जल की हैं अवस्थाएं तीन,
ठोस, द्रव, गैस रूप हैं तीन।
जल एक अच्छा विलायक है,
जीवन में परम सहायक है।।

सुषमा त्रिपाठी (स०अ०)
उच्च प्राथमिक विद्यालय खजनी (रुद्रपुर)
गोरखपुर

कक्षा–4, विषय–पर्यावरण

पाठ–1, पौधों के विभिन्न भाग एवं उसके कार्य, भाग- 1

670

तर्ज–लोकगीत
गीत– पौधों के भागों को...

पौधों के भागों को,
चलो आज जान लेते हैं।
नित नई सामग्रियाँ तो,
यह पौधे हमें देते हैं।।

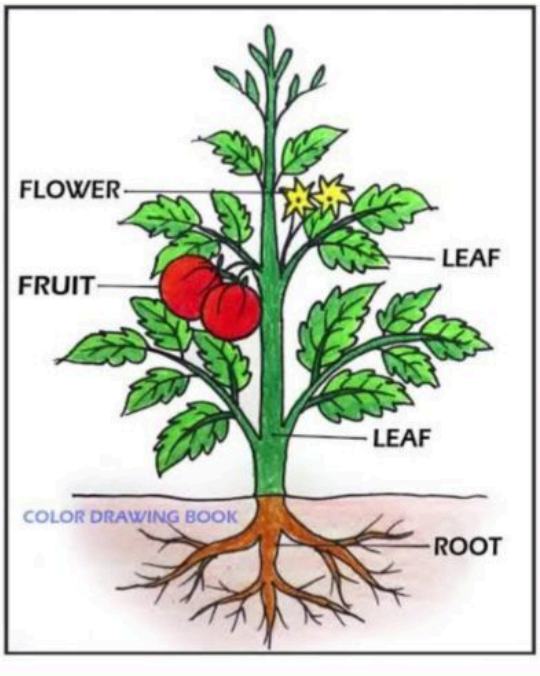

जड़ एक ऐसा भाग है,
जो मिट्टी को जोड़े रखता।
पानी और खनिज लवण,
जड़ मिट्टी से है चखता।।

तनों से निकली शाखाएँ जो,
पौधों का आकार बढ़ाती।
पत्ती, फूल और फलों तक,
अवशोषित जल लवण पहुंचाती।।

सुषमा त्रिपाठी (स०अ०)
उच्च प्राथमिक विद्यालय खजनी (रुद्रपुर)
गोरखपुर

कक्षा–4, विषय–पर्यावरण

पाठ–1, पौधों के विभिन्न भाग एवं उसके कार्य, भाग- 2

671

तर्ज–लोकगीत

गीत– हरी पत्तियाँ...

हरी पत्तियां देखो इनको,
ये भोजन स्वयं बनाती हैं।
प्रकाश संश्लेषण की क्रिया से,
भोजन सब भागों को पहुंचाती हैं।।

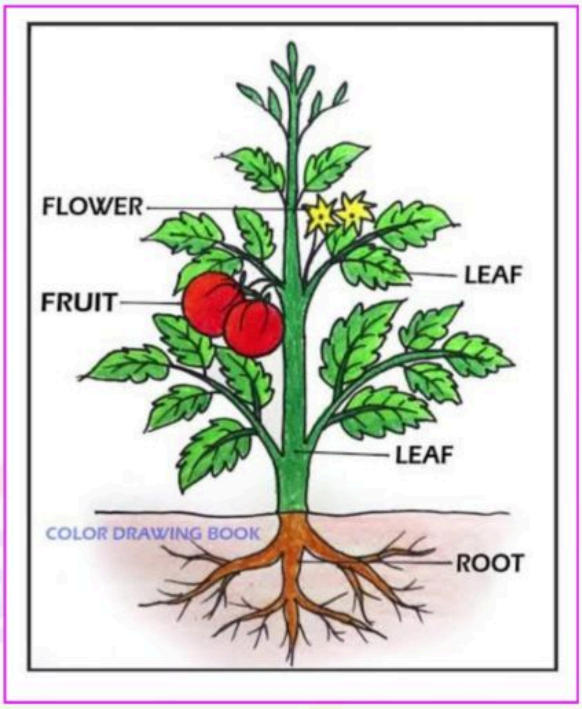

पौधों में खिले सुन्दर फूल,
जिनसे है फल बनता।
पौधों का यही भाग है,
जिससे सबका मन खिलता।।

फूलों से फल बन जाए,
मानव के वही काम है आता।
पौधों के सभी भागों का,
इंसान से है गहरा नाता।।

सुषमा त्रिपाठी (स०अ०)
उच्च प्राथमिक विद्यालय खजनी (रुद्रपुर)
गोरखपुर

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन
फरवरी 2025

कक्षा–4, विषय–पर्यावरण

पाठ–2, पौधों एवं जंतुओं की उपयोगिता तथा उनकी देखभाल, भाग- 1

672

तर्ज–लोकगीत

गीत– पौधों से मिलता कपास...

पौधों से मिलता कपास,
जो कपड़े का निर्माण करे।
संस्कार निर्माण में ये तो,
मानवता का विकास करे।।

पौधों से जो मिले लकड़ियाँ,
उनकी तो बात निराली है।
कुर्सी, हल या हो पलंग,
इससे जीवन में खुशहाली है।।

गेहूँ, चावल, चना या दाल,
पौधों से ही ये मिलता है।
सरसों, मूँगफली फिर चाहे,
मटर, उड़द से दिल खिलता है।

आम, अनार, अमरूद, तूत,
ये सारे ही फल पौधों से।
रंग–बिरंगे फूल खिलते,
है शान अजब इन पौधों से।।

सुषमा त्रिपाठी (स०अ०)
उच्च प्राथमिक विद्यालय खजनी (रुद्रपुर)
गोरखपुर

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन
फरवरी 2025

कक्षा–4, विषय–पर्यावरण

पाठ–2, पौधों एवं जंतुओं की उपयोगिता तथा उनकी देखभाल, भाग- 2

673

तर्ज–लोकगीत
गीत– बहु उपयोगी जन्तु...

बहु उपयोगी जन्तु जानवर,
जिसमें सबसे ऊपर है घोड़ा।
करें सवारी, बोझ को ढोये,
हर काम में अव्वल है घोड़ा।।

खेत की जोत किसान करे जो,
बैल किसान का है उत्तम साथी।
गाड़ी खींच, बोझ को ढो ले,
बैल किसान को अति भाती।।

ठण्डक से जो करना हो बचाव,
स्वेटर के संग गर्माहट जारी।
भेड़ के बाल से बने जो स्वेटर,
शाल स्वेटर की है यारी।।

गाय हमारी माता समझो,
जो उत्तम दूध हमें देती।
हाथी, उँट उत्तम सवारियाँ,
नित मानव को हैं उपयोगी।।

सुषमा त्रिपाठी (स०अ०)
उच्च प्राथमिक विद्यालय खजनी (रुद्रपुर)
गोरखपुर

कक्षा–5, विषय–हिन्दी

पाठ–1, विमल इन्दु की विशाल किरणें, भाग-1

674

तर्ज–लोकगीत

गीत– ईश्वर तेरी माया...

ईश्वर तेरी ही माया है,
स्वच्छ चन्द्रमा की किरणों में।
तेरे ही प्रकाश से चमकें,
जैसे चमके तू किरणों में।।

तेरी माया का ना अन्त है,
तेरी सत्ता तो अनन्त है।
चिर काल तक रहने वाली,
दुनिया को अचरज में डाली।।

तेरी कृपा का ये विस्तार,
दूर तलक इसका है प्रसार।
जैसे दूर तलक फैला है,
समुद्र की सीमा का ये प्रसार।।

आप दया के सागर हैं प्रभु,
आप दया की अनुपम खान।
तेरी प्रशंसा के गीत प्रभु,
सागर की लहरें नित गाती गान।।

सुषमा त्रिपाठी (स०अ०)
उच्च प्राथमिक विद्यालय खजनी (रुद्रपुर)
गोरखपुर

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन
फरवरी 2025

कक्षा–5, विषय–हिन्दी

पाठ–1, विमल इन्दु की विशाल किरणें, भाग-2

675

तर्ज–लोकगीत
गीत– मधुर मुस्कान...

मधुर-मधुर मुस्कान तेरी,
चन्दा की किरणों में झलके।
तेरे हँसने की धुन प्रभुवर,
नदियों की कल-कल में झलके।।

हे दया के सागर जी प्रभुवर,
जिस पर जो दया कर जाते।
सब इच्छाएं पूरी होती प्रभु,
वो दया सिन्धु से तर जाते।।

इस वसुधा पर तेरा ही रूप,
भाँति-भाँति में व्यापित है।
वृक्षों, नदियों की शाखाएं,
तेरी महिमा ही ज्ञापित है।।

चंचल चाँदनी बखान करे तेरा,
सागर की लहर गान करे तेरा।
प्रकृति का कण-कण तेरा ही रूप,
एक नई आशा का संचार करे तेरा।।

सुषमा त्रिपाठी (स०अ०)
उच्च प्राथमिक विद्यालय खजनी (रुद्रपुर)
गोरखपुर

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन
फरवरी 2025

कक्षा–5, विषय–हिन्दी
पाठ–4, सरिता, भाग-1

676

तर्ज–लोकगीत
गीत–छोटी सी नदी का.....

छोटी सी नदी का,
जल है बहुत शीतल।
बहता हुआ जल ये,
स्वच्छ है इसका तल।।

हिमालय की पहाड़ी से,
बहकर है ये आता।
दूध जैसा उज्ज्वल,
निर्मलता से इसका नाता।।

कल-कल की आवाज सुनाए,
गीत नया ये है गाए।
जैसे शरीर की चंचलता को,
मन की लगन को दर्शाए।।

ऊँचे पर्वत से नीचे की तरफ,
पत्थर की चट्टानों पे गिरे।
दिन रात और जीवन भर,
कंकड़ पत्थर पर ही ये फिरे।।

सुषमा त्रिपाठी (स०अ०)
उच्च प्राथमिक विद्यालय खजनी (रुद्रपुर)
गोरखपुर

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन
फरवरी 2025

कक्षा–5, विषय–हिन्दी

पाठ–4, सरिता, भाग-2

677

तर्ज–लोकगीत

गीत–इस वसुधा का.....

इस वसुधा का हृदय तल,
नदिया का पानी धोता।
इस छोटी सी नदी का जल,
कितना शीतल होता।।

पर्वत का कठोर बरफ़,
जब पिघल-पिघलकर बहता।
धरती पर ये आते-आते,
सुन्दर सा जल फिर बनता।।

जब राहगीर नदिया तट पर,
इस जल का है पान करता।
रोम-रोम खिल जाता है,
हृदय में तृप्ति भरता।।

जैसे हो भारत माँ का हृदय,
कोमल सा, स्नेह करने वाला।
वैसे ही ये नदिया का जल,
वसुधा को तृप्त करने वाला।।

सुषमा त्रिपाठी (स०अ०)
उच्च प्राथमिक विद्यालय खजनी (रुद्रपुर)
गोरखपुर

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

फरवरी 2025

कक्षा–5, विषय–हिन्दी

पाठ–1, पंच परमेश्वर, भाग-1

678

तर्ज–लोकगीत
गीत–परम मित्र जुम्मन.....

मित्र परम जुम्मन और अलगू,
जुम्मन की एक मौसी भी थी।
उनके पास कुछ जमीन भी थी,
जो जुम्मन को उसने दी थी।।

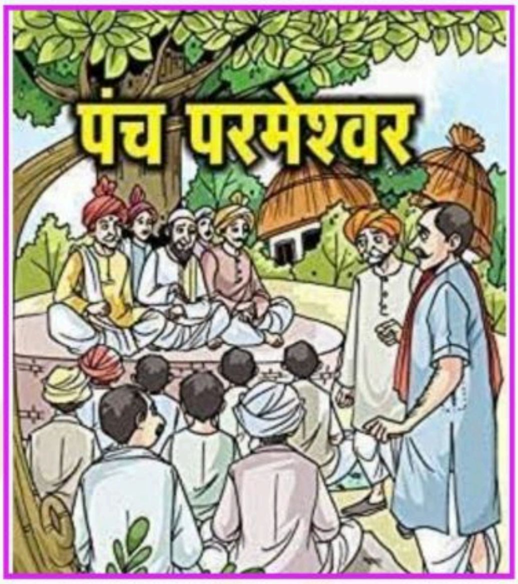

ज्यों मिली समाप्ति जुम्मन को,
मौसी को अब वो परेशान करे।
मामला गया पंचायत में तब,
सरपंच अलगू सुनवाई सरेआम करे।।

माहवार खर्च मौसी को मिले,
फैसला सरपंच ने कर डाला।
वरना रजिस्ट्री निरस्त हो जाए,
परेशान न रही अब तो खाला।।

जुम्मन अलगू को मान शत्रु,
बदले के ही फिराक में था,
बैल मेरा समझू की लापवाही,
मामला पंचायत की ताक पर था।।

सुषमा त्रिपाठी (स०अ०)
उच्च प्राथमिक विद्यालय खजनी (रुद्रपुर)
गोरखपुर

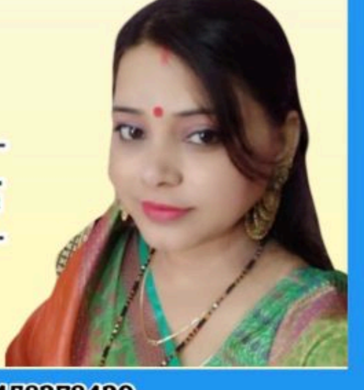

कक्षा–5, विषय–हिन्दी

पाठ–1, पंच परमेश्वर, भाग-2

679

तर्ज–लोकगीत

गीत–अबकि जुम्मन.....

अबकी जुम्मन सरपंच बना,
उसे पद की महिमा का ज्ञान हुआ।
जिरह और घटनाओं से फिर,
फैसला करना आसान हुआ।।

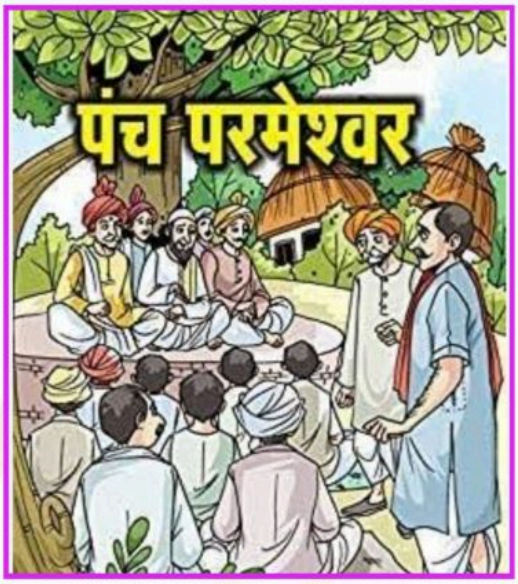

जब बैल लिया समझु ने था,
वो पूरी तरह निरोगी था।
कार्य भार में कुशल बहुत,
वो बैल बहुत उपयोगी था।।

क्षमता से अधिक बोझ लादा,
चारा पानी भी नहीं मिला।
इसलिए मर गया बैल वहां,
अलगू ने बैल दिया था भला।।

जुम्मन अलगू को मान शत्रु,
बदले के ही फिराक में था,
बैल मेरा समझू की लापवाही,
मामला पंचायत की ताक पर था।।

सुषमा त्रिपाठी (स०अ०)
उच्च प्राथमिक विद्यालय खजनी (रुद्रपुर)
गोरखपुर

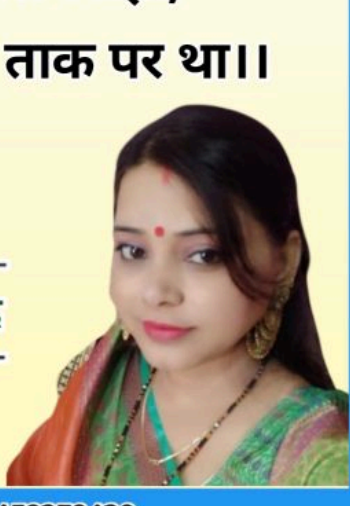

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

फरवरी 2025

कक्षा–4, विषय–हिन्दी

पाठ–4, चींटा, भाग-1

680

तर्ज–लोकगीत

गीत–चींटे ने चींटी के लिये.....

चीटें ने चींटी के लिए एक घर बनाया,
चींटी ने घर में आकर आराम बहुत पाया।
घर को देख चींटी ने खुशियां है जताई,
दूसरों को खुश रखने की सीख चीटें ने पाई।।

चींटी को खुश करने को चींटा बाजार आया,
झटपट शक्कर,चावल, रोटी और पानी लाया।
इन्तजार में चींटी थी उसने जब ये जाना,
तत्परता से कार्य के महत्व को पहचाना।।

चींटी जब घर पर आई खुशियों को है पाई,
गीत गाकर चीटें की प्रशंसा को सुनाई।
प्रेम और समर्पण से चीटें ने कार्य किया,
दूसरों के हृदय पर अमिट छाप दिया।।

सुषमा त्रिपाठी (स०अ०)
उच्च प्राथमिक विद्यालय खजनी (रुद्रपुर)
गोरखपुर

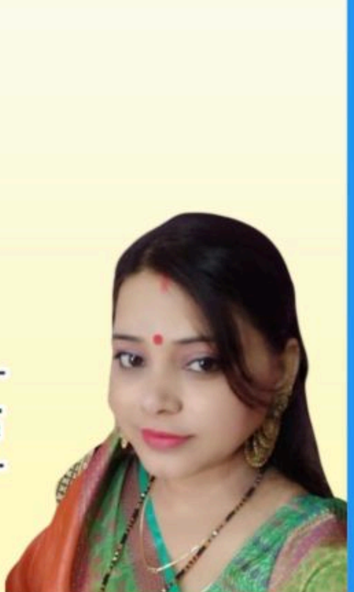

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

फरवरी 2025

कक्षा–4, विषय–हिन्दी

पाठ–4, चींटा, भाग-2

681

तर्ज–लोकगीत

गीत–चींटा लाया दूध.....

चींटा लाया दूध जिससे दही बनाई,
दही बनाकर उसने स्वादिष्ट दही पाई।
खट्टा-मीठा स्वाद दही का चींटा ने जाना,
इतने सारे कार्य में धैर्य समर्पण को पहचाना।।

चीनी की हुई महसूस जरूरत,
गन्ने को फिर वो लेकर आया।
चीनी बना मीठा शक्कर पाकर,
कड़ी मेहनत को फिर पहचाना।।

चीनी से चीटें ने शरबत बनाया,
शरबत में फिर ठण्डा पानी मिलाया।
चींटी और चीटें ने शरबत को पाया,
सहयोग का मतलब समझ में फिर आया।।

सुषमा त्रिपाठी (स०अ०)
उच्च प्राथमिक विद्यालय खजनी (रुद्रपुर)
गोरखपुर

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन
फरवरी 2025

कक्षा–2, विषय–हिन्दी

पाठ–4, माँ, भाग-1

682

तर्ज–लोकगीत

गीत– कितनी प्यारी सुन्दरता

कितनी प्यारी सुन्दरता,
कितनी निश्छल मूरत।
भोली-भाली प्रकृति माँ की,
प्रेम भरी ये सूरत।।

जो जोश बढ़ाए हर मन का,
उत्साहित हमें कर देती है।
एक दीपक बनकर जीवन को,
प्रकाश से ये भर देती है।।

जीवन का पथ संचालित कर,
साहस और हिम्मत देती है।
भयभीत यदि मैं हो जाऊं,
निर्भीक मुझे ये कर देती है।।

प्रेरित करती आगे बढ़ने को,
हर बाधा की है ढाल ये मां।
जो हो जाऊं निराश कभी,
हृदय में आत्मविश्वास है मां।।

सुषमा त्रिपाठी (स०अ०)
उच्च प्राथमिक विद्यालय खजनी (रुद्रपुर)
गोरखपुर

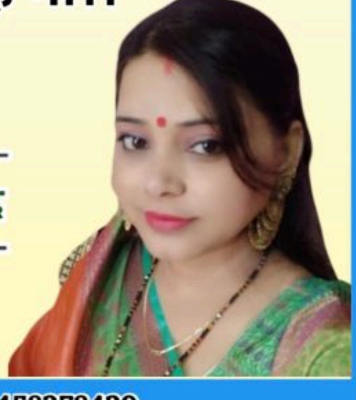

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन
फरवरी 2025

कक्षा-2, विषय-हिन्दी

पाठ-4, माँ, भाग-2

683

तर्ज-लोकगीत
गीत- ऐसी रोशनी है...

ऐसी रोशनी है मेरी माँ,
उज्ज्वल जीवनी को करती।
कदम-कदम पर सीख ये देती,
जीवन की मुश्किल हरती।।

जो ना होती माँ मेरी यदि,
कितनी अधूरी मैं होती।
बिन तेल के जैसे दीया,
बिन बाती के मैं ज्योति।।

माँ आपका प्यार मेरे लिए,
अनंत और अटूट है माँ।
आपका प्यार जो है जीवन में ,
निधि सम्पदा अकूत है माँ।।

सुषमा त्रिपाठी (स०अ०)
उच्च प्राथमिक विद्यालय खजनी (रुद्रपुर)
गोरखपुर

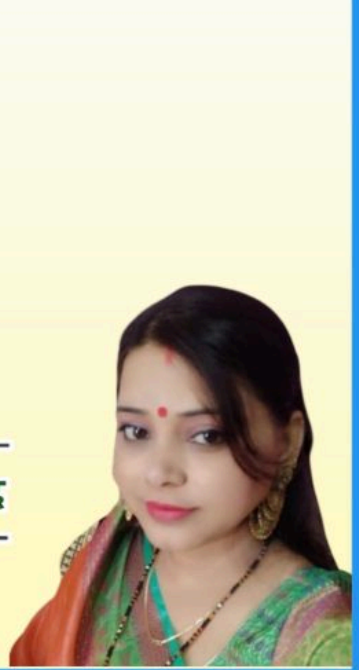

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन
फरवरी 2025

कक्षा–6, विषय–विज्ञान
पाठ-9, विज्ञान और भोजन

684

तर्ज–लोकगीत
गीत–ऐसा भोजन करें...

ऐसा भोजन करें हम हर दम,
जिससे स्वास्थ्य का लहराए परचम।
जिससे ऊर्जा मिले, और पोषण मिले,
बीमारी हो जाए खतम।।

उस भोजन से मिले शक्ति,
जिससे शरीर की होती है वृद्धि।
विकास होता भला, आती सब कला,
बढ़ जाती है सुख समृद्धि।।

भोजन शरीर को ताप देता,
ऊर्जा और शक्ति भी देता।
माँस पेशीय बनाए, तब हृदय हर्षाए,
रोगों से भी रक्षा करता।।

कार्बोहाइड्रेट,प्रोटीन, वसा,
पोषक तत्त्व इससे मिलता।
दाल मोटे अनाज, स्वास्थ्य का यही राज,
स्वस्थ्य तन मन को स्वस्थ्य करता।।

सुषमा त्रिपाठी (स०अ०)
उच्च प्राथमिक विद्यालय खजनी (रुद्रपुर)
गोरखपुर

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन
फरवरी 2025

कक्षा–6, विषय–विज्ञान

पाठ-1, दैनिक जीवन में विज्ञान

685

तर्ज- लोकगीत
गीत- विज्ञान हमारे जीवन में.....

विज्ञान हमारे जीवन में,
कुछ ऐसे भी छाया हैं।
सुबह आंख खोलने से लेकर,
रात्रि में भी इसका साया है।।

चाय बने जो गैस चूल्हे पर,
मीठी-मीठी और प्यारी है।
दाल चावल को धो लिया,
अब प्रेशर कुकर की बारी है।।

खेतों में किसान जब उतरे,
ट्रेक्टर से खेत है जोत रहा।
हार्वेस्टर हो या फिर कुदाल,
यूरिया से उपज आसान रहा।।

एक क्षण में रेल पर बैठे,
या फिर मोटर हो वायुयान।
टी वी पर चलचित्र दिखे,
रेडियो पे बहती मधुर तान।।

सुषमा त्रिपाठी (स०अ०)
उच्च प्राथमिक विद्यालय खजनी (रुद्रपुर)
गोरखपुर

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन
फरवरी 2025

कक्षा–6, विषय–विज्ञान

पाठ-10, स्वच्छता एवं स्वास्थ्य

686

तर्ज–ऐ मालिक तेरे बन्दे हम
गीत-स्वच्छ जीवन में.....

स्वच्छ जीवन में स्वच्छ वातावरण,
स्वास्थ्य जीवन का यही आधार।
खान पान न हो दूषित कभी भी,
दूषित भोजन से बीमारियों का प्रसार।।

देश निर्माण में करे भागीदारी,
ना फिर फैले कोई जन बीमारी।
नित्य हो स्नान, स्वस्थ्य हो खान पान,
सबसे पहले हो सफाई की ही बारी।।

आस पड़ोस की सफाई करें हम,
नदी नालों में ना कूड़ा फेंके हम।
खुले में शौच बन्द होना चाहिए,
सामाजिक स्वच्छता पर काम होना चाहिए।।

कूड़ेदान का नित्य प्रयोग करो सब,
गीला और सूखा अलग रखो सब।
स्वयं और देश का इससे ही विकास,
स्वस्थ्य जीवन का रखो सब आस।।

सुषमा त्रिपाठी (स०अ०)
उच्च प्राथमिक विद्यालय खजनी (रुद्रपुर)
गोरखपुर

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन
फरवरी 2025

कक्षा–6, विषय–विज्ञान

पाठ-16, जल

687

तर्ज- लोकगीत
गीत- जल जीवन का आधार....

जल जीवन का है आधार,
इसके बिन जीवन बेकार।
अंगों में स्फूर्ति है आती,
बेचैनी दूर हो जाती।।

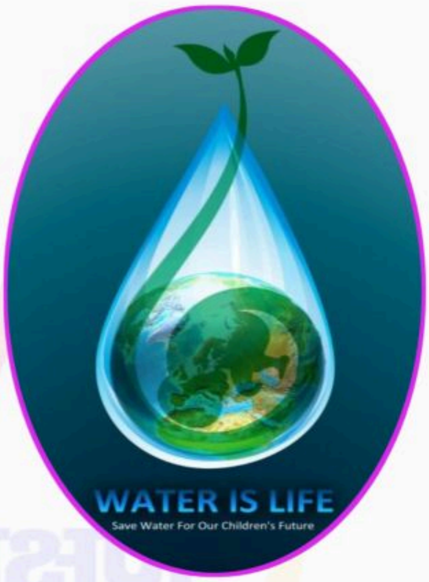

ऑक्सीजन की तरह आवश्यक जल,
जल बिन हो जाता है जीवन बेकल।
पृथ्वी पर जीवन भी न हो पाता,
प्रकृति से यदि जल ना आता।।

शरीर में जल की मात्रा अधिक,
जल वृद्धि में भी सहायक है।
जल का प्रतिशत पृथ्वी पर अधिक,
जल जीवन का ही वाहक है।।

जल की हैं अवस्थाएं तीन,
ठोस, द्रव, गैस रूप हैं तीन।
जल एक अच्छा विलायक है,
जीवन में परम सहायक है।।

सुषमा त्रिपाठी (स०अ०)
उच्च प्राथमिक विद्यालय खजनी (रुद्रपुर)
गोरखपुर